NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

वैश्विक कौशल की कमी को दूर करना

वैश्विक कौशल की कमी को दूर करना

सन्दर्भ

- कई देशों के साथ भारत के समझौते के एक भाग के रूप में, यह चर्चा करना महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार चक्रीय प्रवासन वैश्विक कौशल की कमी को पूरा करने और भारतीयों को गरीबी से बाहर निकालने में सहायक हो सकता है।

सर्कुलर माइग्रेशन के बारे में

- तेजी से आपस में जुड़ती दुनिया में, सीमाओं के पार श्रमिकों की आवाजाही, जिसे सर्कुलर माइग्रेशन के रूप में जाना जाता है, वैश्विक कौशल की कमी को दूर करने में एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है।
- सर्कुलर माइग्रेशन से तात्पर्य घर और मेजबान क्षेत्रों के बीच एक प्रवासी श्रमिक के अस्थायी तथा दोहराव वाले आंदोलन से है, जो सामान्यतः रोजगार के उद्देश्यों के लिए होता है।
- स्थायी प्रवास के विपरीत, सर्कुलर माइग्रेशन श्रमिकों को विदेश में कार्य करने के बाद अपने देश लौटने की अनुमति देता है, जो प्रायः नए कौशल और अनुभव लेकर आता है जो उनकी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को लाभ पहुंचा सकते हैं।
- यह घटना न केवल श्रम बाजारों में अंतराल को समाप्त करने में सहायता करती है बल्कि भेजने और प्राप्त करने वाले दोनों देशों में आर्थिक संवृद्धि और विकास को भी बढ़ावा देती है।

वैश्विक कौशल की कमी

- वैश्विक अर्थव्यवस्था वर्तमान में कौशल की महत्वपूर्ण कमी का सामना कर रही है, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा, प्रौद्योगिकी और निर्माण जैसे क्षेत्रों में।
- विकसित देशों में बढ़ती उम्र की जनसँख्या और तेजी से हो रही तकनीकी प्रगति ने इस मुद्दे को और बढ़ा दिया है। उदाहरण के लिए, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की मांग में उछाल आया है, जबकि कुशल श्रमिकों की आपूर्ति में तेजी नहीं आई है।

सर्कुलर माइग्रेशन की भूमिका

- सर्कुलर माइग्रेशन इन कौशल की कमी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। श्रमिकों को अस्थायी रूप से श्रम की कमी वाले देशों में जाने की अनुमति देकर, यह वैश्विक स्तर पर कौशल की आपूर्ति और मांग को संतुलित करने में सहायता करता है।
- उदाहरण के लिए, खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों और यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्रों में भारतीय श्रमिकों की मांग तेजी से बढ़ रही है, जहां निर्माण तथा स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में कुशल श्रमिकों की उच्च मांग है।

सर्कुलर माइग्रेशन से संबंधित समझौते

- भारत गतिशीलता और सहयोग बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों के साथ सर्कुलर माइग्रेशन से संबंधित समझौतों में सक्रिय रूप से शामिल रहा है।

- **भारत और इटली के बीच माइग्रेशन और मोबिलिटी समझौता:** इसका उद्देश्य लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देना, छात्रों, कुशल श्रमिकों, व्यापारियों एवं युवा पेशेवरों की गतिशीलता को सुविधाजनक बनाना और अनियमित प्रवास से संबंधित मुद्दों पर सहयोग को मजबूत करना है।
- इसके अतिरिक्त, भारत की यूरोपीय संघ के साथ रणनीतिक साझेदारी है, जिसमें प्रवास और गतिशीलता पर सहयोग शामिल है।
- इसका उद्देश्य विभिन्न नीतिगत उपायों और संयुक्त कार्रवाइयों के माध्यम से अत्यधिक कुशल और कम कुशल प्रवास के साथ-साथ अनियमित प्रवास दोनों को संबोधित करना है।
- भारत ने व्यापार, गतिशीलता और सहयोग बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों के साथ कई समझौते किए हैं।
    - जैसे भारत-श्रीलंका और भारत-आसियान के बीच मुक्त व्यापार समझौते (FTAs);
    - भारत-जापान, भारत-दक्षिण कोरिया के बीच व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPAs);
    - भारत-मर्कोसुर और भारत-चिली के बीच तरजीही व्यापार समझौते (PTAs); और
    - यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी और मॉरीशस सहित कई देशों के साथ द्विपक्षीय निवेश संधियाँ (BITs)।

भारत के अंदर सर्कुलर माइग्रेशन

- भारत में, आंतरिक प्रवास, जो किसी विशेष देश या राज्य के अंदर प्रवास होता है, लगभग हमेशा चक्रीय रहा है।
- इसमें लोगों का अपने मूल स्थान और गंतव्य के बीच बार-बार आना-जाना शामिल है, जो प्रायः मौसमी रोजगार के अवसरों से प्रेरित होता है।
- इस प्रकार का प्रवास निम्न आय वर्ग के लोगों में प्रचलित है जो कार्य की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में जाते हैं।
- विनिर्माण, निर्माण और सेवा क्षेत्र में रोजगारों के आगमन के साथ, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी शहरों की ओर प्रवासियों का एक बड़ा प्रवाह हुआ है।

घरेलू गंतव्य

- **शहरी केंद्र:** मुंबई, दिल्ली, बैंगलोर और चेन्नई जैसे शहर निर्माण, विनिर्माण और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में बेहतर रोजगार के अवसरों के कारण बड़ी संख्या में प्रवासियों को आकर्षित करते हैं।
- **औद्योगिक क्षेत्र:** गुजरात और महाराष्ट्र जैसे महत्वपूर्ण औद्योगिक गतिविधि वाले क्षेत्र, परिपत्र प्रवासियों के लिए सामान्य गंतव्य हैं।
- **कृषि क्षेत्र:** पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में कृषि कार्य के लिए मौसमी प्रवास होता है।

भारत में सर्कुलर माइग्रेन्ट के समर्थन हेतु नीतिगत हस्तक्षेप

- **आत्मनिर्भर भारत अभियान:** इसका उद्देश्य प्रवासी श्रमिकों को सहायता प्रदान करना है, जैसे कि किफायती किराये के आवास परिसरों (ARHCs) का प्रावधान और एक राष्ट्र एक राशन कार्ड (ONORC) योजना का विस्तार।
    - **एक राष्ट्र एक राशन कार्ड (ONORC):** यह पहल प्रवासियों को देश भर में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी वाले खाद्यान्न तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे उनके स्थान की परवाह किए बिना खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।
    - **किफायती किराये के आवास परिसर (ARHC):** इस योजना का उद्देश्य प्रवासियों को किफ़ायती किराये के आवास उपलब्ध कराना, उनके रहने की लागत को कम करना और उनके रहने की स्थिति में सुधार करना है।
- **राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (NULM):** यह शहरी गरीब परिवारों की गरीबी और भेद्यता

को कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है, ताकि उन्हें लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसरों तक पहुँच मिल सके।

- **ई-श्रम पोर्टल:** प्रवासियों सहित असंगठित श्रमिकों के लिए एक राष्ट्रीय डेटाबेस, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्हें सामाजिक सुरक्षा लाभ और अन्य कल्याणकारी उपाय प्राप्त हों।
- **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (PMGKY):** इसका उद्देश्य कोविड-19 महामारी के दौरान प्रवासी श्रमिकों सहित गरीबों और कमजोर लोगों को राहत प्रदान करना है।
  - इसमें मुफ्त खाद्यान्न, प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण और अन्य लाभ शामिल हैं।
- **ड्राफ्ट माइग्रेशन पॉलिसी:** सरकार प्रवासियों के अधिकारों और जरूरतों को संबोधित करने, गंतव्य राज्यों में उनका एकीकरण सुनिश्चित करने और उन्हें शोषण से बचाने के लिए एक व्यापक प्रवास नीति पर काम कर रही है।

प्रेषक देशों के लिए लाभ

- **अर्थव्यवस्था:** प्रवासी प्रायः अपने घर धन भेजते हैं, जिससे जीवन स्तर में सुधार हो सकता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है।
  - अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया से उच्च आय वाले व्यक्तियों द्वारा भारत को भेजे जाने वाले कुल धन का केवल 32% हिस्सा है।
  - दूसरी ओर, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कुवैत, कतर और ओमान में मैनुअल श्रमिक भारत को भेजे जाने वाले कुल धन का 40% योगदान करते हैं।
- **नए कौशल प्राप्त करना:** इसके अतिरिक्त, जब ये श्रमिक वापस लौटते हैं, तो वे अपने साथ मूल्यवान कौशल और ज्ञान लेकर आते हैं, जो उनके गृह देशों में उत्पादकता तथा नवाचार को बढ़ा सकते हैं।
- कौशल का यह हस्तांतरण विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **सामाजिक पूंजी:** प्रवासी अपने गृह और मेजबान देशों दोनों में नेटवर्क बना सकते हैं, जो व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक विकास के लिए लाभदायक हो सकता है।
- इस प्रकार का प्रवास व्यक्तियों को विदेश में अवसरों का लाभ उठाते हुए अपने गृह देश के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने की अनुमति देता है।

चुनौतियाँ

- **कौशल का असंतुलन:** एक प्रमुख मुद्दा प्रवासी श्रमिकों के कौशल और मेजबान देशों की जरूरतों के बीच असंतुलन है। विदेश में अर्जित कौशल हमेशा हस्तांतरणीय या स्वदेश के रोजगार बाजार के लिए प्रासंगिक नहीं हो सकते हैं, जिससे बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न होती है।
- **ब्रेन ड्रेन:** स्वदेश से कुशल श्रमिकों को खोने का जोखिम है, जो स्थानीय विकास में बाधा बन सकता है।
- **कामकाजी स्थितियाँ:** प्रवासियों को प्रायः चुनौतीपूर्ण कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें कम वेतन, नौकरी की सुरक्षा की कमी और खराब रहने की स्थिति शामिल है।
- **जबरन श्रम:** कुछ मामलों में, प्रवासियों को शोषण और जबरन श्रम का सामना करना पड़ सकता है।

वापस लौटने वाले प्रवासियों के लिए सफल एकीकरण कार्यक्रमों के उदाहरण

- **OECD द्वारा वापस लौटने वाले प्रवासियों का सतत पुनः एकीकरण:** ये रोजगार, शिक्षा और सामाजिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वापस लौटने वाले प्रवासी अपने गृह समुदायों में सफलतापूर्वक पुनः एकीकृत हो सकें।
- **IOM द्वारा पुनः एकीकरण सहायता कार्यक्रम:** यह पुनः एकीकरण सहायता कार्यक्रम प्रदान करता है जिसमें मानवीय सहायता, सामुदायिक स्थिरीकरण और विकास सहयोग शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य स्वास्थ्य, आवास और सामाजिक सामंजस्य सहित वापस लौटने वाले प्रवासियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करना है।
- **विभिन्न देशों द्वारा नकद प्रोत्साहन कार्यक्रम:** चेक गणराज्य, जापान और स्पेन जैसे देशों ने प्रवासियों की वापसी को प्रोत्साहित करने के लिए नकद प्रोत्साहन कार्यक्रम शुरू किए हैं। ये कार्यक्रम वापस लौटने वाले प्रवासियों को व्यवसाय शुरू करने या रोजगार खोजने में सहायता करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में उनके पुनः एकीकरण में सुविधा होती है।
- **समुदाय-आधारित पुनः एकीकरण:** कई समुदाय-आधारित पहल वापस लौटने वाले प्रवासियों के सामाजिक और आर्थिक पुनः एकीकरण पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इन कार्यक्रमों में प्रायः स्थानीय गैर सरकारी संगठन और सामुदायिक संगठन शामिल होते हैं जो व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार की नियुक्ति सेवाएँ और मनोवैज्ञानिक सहायता सहित अनुरूप सहायता प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह

- वैश्विक बाजार की मांग के अनुरूप शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में निवेश करना आवश्यक है।
- भारत में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) द्वारा कार्यान्वित किए जाने वाले कार्यक्रमों का उद्देश्य श्रमिकों को अंतर्राष्ट्रीय श्रम बाजारों में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना है।
- सर्कुलर माइग्रेशन वैश्विक कौशल की कमी के लिए एक व्यवहार्य समाधान प्रस्तुत करता है, जिससे भेजने वाले और प्राप्त करने वाले दोनों देशों को लाभ होता है।
- अधिक गतिशील और उत्तरदायी श्रम बाजार को बढ़ावा देकर, यह कौशल की आपूर्ति और मांग के बीच के अंतर को समाप्त करने में सहायता कर सकता है, जो अंततः वैश्विक आर्थिक विकास और वृद्धि में योगदान देता है।

Source: IE

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. वैश्विक कौशल अंतर को दूर करने के लिए एक रणनीतिक उपकरण के रूप में सर्कुलर माइग्रेशन का लाभ कैसे उठाया जा सकता है, जबकि इसके साथ ही भारतीयों को गरीबी से बचने और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने का मार्ग भी प्रदान किया जा सकता है?

■■■■